वृक्षों की रक्षा: स्वस्थ पर्यावरण के लिए आवश्यक

भारत बड़ी तेजी से अपनी सबसे महत्वपूर्ण सम्पत्ति को खो रहा है। वह सम्पत्ति है वन। वृक्ष भूमि को स्वर्ण का रुप देता है। वह पानी को रोकता है और मिट्टी को कटने से बचाता है। प्राचीनकाल से ही हम वृक्षों की पूजा करते हैं और हमारे धार्मिक ग्रन्थ भी वृक्षों के महत्व का उल्लेख करते हैं। धरती पर वृक्षों का अस्तित्व मनुष्य से पहले का है। वृक्ष हमारी प्रत्येक प्रकार से रक्षा करते हैं। उनकी छाल उपयोगी है और डाल भी। वृक्ष डाल पर पक्षी बसेरा करते हैं और जब वही डाल वृक्ष से अलग होती है तो किसी गरीब की झोपड़ी का छप्पर बनाती है।

वृक्ष वातावरण से प्रदूषित वायु ग्रहण करते हैं तथा आक्सीजन छोड़कर जीवन प्रदान करते हैं। वृक्ष वातावरण तापमान को नियंत्रित कर वर्षा को आमंत्रित करते हैं और मौसम को संतुलित करते हैं। वैज्ञानिकों द्वारा निरन्तर किये शोध से भी यह प्रमाणित हो चुका है कि विभिन्न रोगों में काम आने वाली कुछ दवाइयां भी वृक्षों से ही प्राप्त होती हैं। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि वृक्ष अपना जीवन मनुष्य के लिए समर्पित करते है। आखिर जब वृक्ष हमारे जीवन में इतने महत्वपूर्ण हैं तो हम वृक्षों को उतना ही महत्व क्यों नहीं दे पाते या देना ही नहीं चाहते। जंगलों को बनने में कई वर्ष लग जाते हैं परन्तु हम उन्हें काटकर मरुस्थल बना रहे हैं। वृक्षों के कटने से उनका स्पंजी रुप कम हो गया है और इसका फल यह हुआ है कि पृथ्वी की ऊपरी सतह की अरबों मीट्रिक टन तक मिट्टी कटने का अनुमान है। इतनी मिट्टी से पूरे कलकत्ता के निवासियों के कच्चे घर बन सकते थे। इतनी मिट्टी 93 करोड़ टन खाद्यान्न उत्पादन के लिए पर्याप्त थी। यदि स्थिति ऐसी ही रही तो देश को 18 वर्ष बाद 14 करोड़ हैक्टेयर मिट्टी की क्षति होगी। आज भारत में प्रति मिनट 0.4478 वर्ग किलोमीटर वन कट रहा है। यह निष्कर्ष नेशनल रिमोट सैन्सिंग एजेन्सी का है जिसे उसने लेंड सेट उपग्रह के द्वारा प्राप्त किया है। इसका दुष्प्रभाव हमारे सामने है यथा मौसम के परिवर्तन, बाढ़ मिट्टी की कटान, रेगिस्तान की अभिवृद्धि और कितनी ही जेनेसिक सम्पत्ति का क्षय। आज बाढ़ आने और सूखा पड़ने का मुख्य कारण केवल वृक्षों की कटाई है। वृक्ष जिस रफ्तार से काटे जा रहे हैं वह अत्याधिक विनाशकारी है। उदाहारण के लिए 1978 से 1981 तक वनों की कटाई से राज्यों को 46 लाख 14 हजार रुपये प्राप्त हुये और इसी समय में बाढ़ से होने वाली हानि का केन्द्र और राज्य सरकारों द्वारा अनुमान 10 अरब रुपया है। दूसरा उदाहरण महाराष्ट्र के लातूर और उस्मानाबाद में आये भूकम्प हैं, जो मुख्य रुप से वनों की कटाई से उत्पन्न प्राकृतिक असन्तुलन है। देश के 4 करोड़ आदिवासी पूरी तरह से वनों पर आश्रित हैं। यद्यपि उत्तर प्रदेश में काफी पहाड़ी क्षेत्र हैं पर उसमें मात्र 7.4 प्रतिशत भूमि पर वन हैं और पश्चिम बंगाल में मात्र 1.8 प्रतिशत भूमि पर वन हैं। वनों की सबसे अधिक हानि हिमाचल प्रदेश में 10.60 प्रतिशत, मणिपुर में 6.79 प्रतिशत, उड़ीसा में 5.75 प्रतिशत, जम्मू -कश्मीर में 3.59 प्रतिशत हुई है। सिक्किम एक मात्र ऐसा प्रदेश है जहां वन 15.36 प्रतिशत बचे हैं। नेशनल रिमोट सेन्सिंग ऐजेन्सी द्वारा किया गया सर्वे एफ0ओ0ए0 की चेतावनी का प्रतिपोषण करता है। उसका कहना है कि यदि इसी बढ़ी दर से भारत में पेड़ कटते रहे तो शीघ्र ही पर्यावरणीय महाविपदा भोगने की नौबत आ जायेगी।

व्यक्ति आज यदि एक बच्चा पैदा करे और दूसरे बच्चे के बदले 10 वृक्ष लगाये तब कहीं जाकर पर्यावरण में सन्तुलन स्थापित हो पायेगा। अतः अभी देर नहीं हुई है, पर्यावरण की सुरक्षा हेतु वृक्षारोपण का अभियान जन-जन का अभियान होना चाहिए।

सुनहरे भविष्य का नारा। वृक्षारोपण अभियान हमारा।।

आओ, तन, मन व धन से पर्यावरण सन्तुलन हेतु एक-एक वृक्ष लगाने की शपथ लें और अपना एवं आने वाली पीढ़ी का उज्जवल, स्वस्थ एवं मधुर भविष्य सुनिश्चित करें।

राजेश नेमा, "वरिष्ठ शोध सहायक"